INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 7.560 (SJIF 2024)

सेनुवार के उत्खनन से प्राप्त मृदभांडों का पुरातात्विक अवलोकन

(Archaeological observation of pottery obtained from the excavation of Senuwar)

Dr. Shakti Prasad Tiwari

Assitant Professor,
Choudhary Charan Singh College,
Rajpur Rohtas (Bihar, India)
E-mail: shaktihz@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/04.2024-56924971/IRJHIS2404031

सारांश–

सेनुवार विंध्य पर्वत श्रृंखला के कैमूर पहाड़ी के ही पास शिवसागर प्रखंड में सेनुवार में सुलभता को देखते हुए अपना निवास बनाया। इस पुरास्थल का उत्खनन डॉ बी०पी० सिंह के नेतृत्व में उत्खनन दल द्वारा संपादित किया गया । उत्खनन में नवपाषाण काल से लेकर विभिन्न संस्कृति कालों का पता चलता है । यहाँ के लोगों को प्रारम्भ में धातु विहीन थे परन्तु समय के साथ तांबे से परिचित हो गए। प्रारम्भ में मृदभांड अपरिष्कृत गढ़न मोटी घर वाला होता था तथा हस्त निर्मित होता था अच्छी तरह पक्का न होने के कारण पत्रों के रूखापन छिपाने के लिए लाल, फिका लाल, गुलाबी ,चमकीली लाल , गाढ़ा लाल एवं चॉकलेटी रंग का लेप चढ़ा दिया जाता था । परन्तु बाद के समय में लाल एवं मार्जित लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं इस संस्कृति काल में मृदभांड का गढन अपेक्षाकृत बेहतर होने लगती है चाक का प्रयोग होने लगा जिसपर गेरुआ रंग की रैखिक चित्रकारी देखने को मिलती है । उत्खनन कार्य के दौरान यहाँ से कुशल कारीगरी को प्रदर्शित करता मिट्टी के पॉलिशदार बर्तन मिले हैं जिनपर सोना चांदी के रंग का पॉलिश भी हुआ है । खुदाई से धातु द्वारा निर्मित उपकरण एवं सामग्री प्राप्त हुई है। जरूरत के हिसाब से मिट्टी के बर्तनों का निर्माण हेतु सेरामिक उद्योग लगाया गया था।

कूटशब्द–*सेरामिक, मार्जित, पुढारी, ठिकरे*

प्रस्तावना :

सेनुवार दक्षिण बिहार के रोहतास जिले के सासाराम अनुमंडल से 7 किलोमीटर दक्षिण में शिवसागर थाना के अंतर्गत रुद्र नदी के दाहिनी तट से 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विंध्य पर्वत श्रृंखला के ही एक छोटे से हिस्से जिसे कैमूर पहाड़ी का नाम दिया गया है । यह सेनुवार सभ्यता इसी पहाड़ी या कहें विंध्य पर्वत श्रृंखला के पास सासाराम में परिपक्व हुआ। इस पुरास्थल का उत्खनन 1985– 87 तथा 1988–90, के मध्य डॉ बी०पी० सिंह के नेतृत्व में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उत्खनन दल द्वारा संपादित किया गया , जिसका क्षेत्रफल लगभग 21 एकड़ है। उत्खनन में नवपाषाण काल से लेकर विभिन्न संस्कृति कालों का पता चलता है । हड़प्पा संस्कृति के पत्तन के बाद सिंधु घाटी सभ्यता के लोग अलग जगह पलायन कर भारत के दक्षिण एवं पूर्वी क्षेत्र की ओर जाने लगे पूर्वी क्षेत्र के सेनुवार में सुलभता को देखते हुए अपना निवास बनाया।

इस क्षेत्र में कैमूर की पहाड़ी की तिलहटी तथा उसमें बहाने वाले एक जलधारा के किनारे ऐसी अनेक संस्कृतियों को फलने फूलने का अवसर मिला क्योंकि मानव सभ्यता के लिए औजार बनाने के लिए पाषाण खंड तथा जल यहां पर सुलभ था।[1]

सेनुवार के पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा बीरबल सहनी इंस्टीट्यूट आफ पॉलीबॉटनी के तत्वाधान में वीरेंद्र प्रताप, एल० मिश्रा ,जी० आर ० सिंह तथा एस०के० सरस्वती की देखरेख में इस स्थल का उत्खनन कार्य प्रारंभ हुआ।[2]

सेनुवार के प्रथम सांस्कृतिक काल को दो उपभागो में विभाजित किया गया है प्रथम उप काल धातु विहीन है तो दूसरे संस्कृति काल के लोग तांबे से परिचित हो गए। प्रथम सांस्कृतिक काल अ से मार्जित लाल मृदभांड, मार्जित धूसर मृदभांड, रज्जूछाप मृदभांड , लाल मृदभांड एवं कृष्ण लोहित मृदभांड प्राप्त हुए है। सेनुवार के प्रथम काल अ से संपूर्ण मृदभांड परंपराओं का 8.11% मार्जित लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं।[3]

यह मृदभांड अपरिष्कृत गढ़न के हैं तथा इसकी बनावट मध्यम से मोटी घर वाला है पत्रों के निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में पर्याप्त अशुद्धियां है तथा इसे अच्छी तरह से नहीं गुथा गया है और ना ही इसे अच्छी तरह से पकाया गया है जिस कारण इसका आंतरिक भाग कला एवं उनके दोनों किनारों का भाग लाल है। इन पत्रों के रूखापन छिपाने के लिए लाल, फिका लाल, गुलाबी ,चमकीली लाल , गाढ़ा लाल एवं चॉकलेटी रंग का लेप चढ़ा दिया गया है । प्रमुख पात्र के प्रकार में घड़े , कटोरे , ओष्ठ युक्त कटोरे आदि प्रमुख है।[4]

सेनूवार के संपूर्ण मृदभांड परंपराओं का 6.22% मार्जित धूसर मृदभांड प्राप्त हुए हैं। इन मृदभांड का निर्माण मार्जित लाल मृदभांड के सामान्य किया गया था । प्रमुख पात्र के प्रकारों में घड़े, कटोरे, तसले आदि महत्वपूर्ण है।[5] सेनूवार से कुछ रज्जूछाप मृदभांड मिले हैं।[6] यह मृदभांड कुछ हस्त निर्मित है परंतु अधिकांश चाक निर्मित है। इन मृदभांड में प्रयुक्त मिट्टी को अच्छी तरह से गुथ नहीं गया था।[7] नवपाषाण काल के रज्जूछाप मृदभांड सेनूवार के अतिरिक्त कोल्डिहवा मगहरा और चिरांद से भी प्राप्त होते हैं।[8]

सेनूवार से लाल मृदभांड कल मृदभांड परंपराओं का 75.65% प्राप्त हुआ है। उत्खाता ने इन्हें तीन श्रेणियां में विभाजित किया है अपरिष्कृत लाल मृदभांड, लाल लेपित मृदभांड , लेपित एवं चिकना मृदभांड ।[9] उपरोक्त पत्रों के निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी को अच्छी तरह से गुथा नहीं गया था । प्रमुख पात्र प्रकारों में घड़े, छिछले कटोरे, गहरे कटोरे आदि प्रमुख हैं।[10]

सेनूवार के प्रथम अ से ही कृष्ण लोहित मृदभांड प्राप्त हुए हैं। इस मृदभांडों के निर्माण में प्रयुक्त मिट्टी में काफी अशुद्धियां हैं । इन्हें कम आंच पर पकाया गया है कम एवं आकर विहीन ठिकरे के कारण उत्खाता द्वारा पात्र के प्रकारों को पहचान करने में असुविधा हुई है।[11]

सेनूवार के पाषाण उपकरणों चट क्वाट्स और चार्ल्सडनी के विभिन्न आकार प्रकार के ब्लेड, नोक छेदक ,छोटे धारदार त्रिभुजाकार पुढारी प्रमुख है । यहां से प्राप्त पार्सल उपकरणों की संख्या एवं प्रकार चिरांद की तुलना में कम है।[12]

प्रथम ब के नवपाषाण संस्कृति के 202 मीटर पतले संस्कृतिक क्रम मिला है इस सांस्कृतिक क्रम से लाल एवं मार्जित लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं इस संस्कृति काल में पहले काल की अपेक्षा मृदभांड का गढन

अपेक्षाकृत बेहतर होने लगती है इस काल में हस्त निर्मित मृदभांड काफी कम संख्या में प्राप्त हुए हैं। पकाने के बाद इन मृदभांड पर गेरुआ रंग की रैखिक एवं आई तिरछी चित्रकारी की परंपरा जारी रहती है।[13]

इस काल में मृदभांडो पर अलंकरण की प्रवृत्ति बढ़ गई कई मृदभांडो पर दांतदार डिजाईन अंगूठे, रस्सी की छाप तथा चिपकहवां अलंकरण दिखाई पड़ती है हमें अब कनखेदार कटोरे, छिद्रदार कलश, ओष्टदार कटोरे, टोंटीदार घड़े और मृदभांड मिले लेकिन हमें चिरांद एवं यूपी के बेलन घाटी के समान यहां से छिद्रित मृदभांड नहीं मिले हैं।[14] उत्खनन कार्य के दौरान यहाँ से मिट्टी के पॉलिशदार बर्तन मिले हैं जिनपर सोना चांदी के रंग का पॉलिश भी हुआ है जो अपने आप में कुशल कारीगरी को प्रदर्शित करता है। यहां से मिट्टी के कुछ तिकोन चकत्तीया एवं छिद्रदार मिट्टी के मनके प्राप्त हुए हैं ऐसी चकत्तीया अन्य नवपाषाण संस्कृति वाले पुरास्थल से नहीं मिले हैं।[15] सेनुवार के खुदाई से धातु द्वारा निर्मित उपकरण एवं सामग्री प्राप्त हुई है। यहाँ के लोग मिट्टी के बर्तन बनाने हेतु सेरामिक उद्योग लगाया गया था जिसमे जरूरत के हिसाब से मिट्टी के बर्तनों का निर्माण होता था।

पत्थर के उपकरण इस स्तर से काफी संख्या में मिले हैं जिनमें ब्लेड आदि प्रमुख है। ज्यामितिय उपकरण काफी कम है हथौड़े, अंगुखूरचक, मुसल ,चक्की आदि प्रथम उपभाग जैसे पाषाण सामाग्रियां प्राप्त हुई है परंतु चावल के अतिरिक्त इस काल में गेहूं एवं चना भी पहली बार दृष्टव्य होता है किंतु चिरांद में उनकी उपस्थिति प्रारंभ से ही है। सीप के आभूषण यहां से प्राप्त हुए हैं किंतु चिरांद में यह अनुपस्थित है अंगेट फ्रेट और कारनेलियन के मनके प्राप्त हुए हैं ।हड्डियों के उपकरण से छिलने वाले औजार छेदक एवं नोक भी प्राप्त हुए हैं।[16]

इस सांस्कृतिक स्तर से चिरांद के समान ही हस्त निर्मित सांड मिला है अन्य मृणमूर्तियों में सीटी के अतिरिक्त चौकोर तथा गोल चकत्तियां भी प्राप्त हुई है।[17]

इस संस्कृति काल में हमें कई पीढियों के लोग एक साथ निवास करते थे यहां से 20 सेमी पतला फर्श प्रकाश में आया है कुछ गर्त को देखकर यहां के निवासियों के आवासों का स्पष्ट विवरण नहीं किया जा सकता है। जली हुई मिट्टी पर सरकंडे की छाप से या प्रतीत होता है कि यहां के लोग बांस की फट्टियों की दीवार पर मिट्टी का लेप लगाकर घास – फूस छत वाले घरों में रहते होंगे।[18] यहाँ के घरों के फर्श कंकड़ और मृदभांडों के टूटे हुए टुकड़े को मिट्टी के साथ अच्छी तरह पीटकर बनाए गए थे।

कार्बन 14 पद्धति के आधार पर इस नव– पाषाण संस्कृति का काल 1771 ईसा पूर्व + 120, 1500 ईसा पूर्व + 110 ईसा पूर्व अनुमानित की जा सकती है।[19]

नवासन संस्कृति के पश्चात द्वितीया संस्कृति काल ताम्र पाषणिक है इस काल में लाल काले एवं लाल कृष्ण लेपित, मार्जित काला मृदभांड, कृष्णा चित्रित लाल मृदभांड, रज्जूछाप मृदभांड प्राप्त हुए हैं।[20]

सेनूवार के काल द्वितीय के संपूर्ण मृदभांड परंपराओं का 75.89 लाल मृदभांड है। इस मृदभांड परंपराओं को दो भागों में विभाजित किया गया है । अपरिष्कृत मृदभांड एवं लाल लिपित मृदभांड।[20]

इन दोनों प्रकार के मृदभांड में कुछ हस्त निर्मित है जबकि अधिकांश मृदभांड चाक निर्मित है। इन्हें पकाने के पश्चात गेरू रंग से चित्रण किया गया है प्रमुख पात्र प्रकारों में चिमटे आधार वाले कटोरे अंदर की ओर मूडे आवठ वाले घड़े इत्यादि है। मार्जित काला मृदभांड सामान्य तथा मध्यम गढ़न के पात्र हैं इसके निर्माण

में प्रयुक्त मिट्टी में पर्याप्त अशुद्धियां हैं इसे अच्छी तरह से गुथ भी नहीं किया है। मार्जित काला मृदभांड में केवल कटोरे ही प्राप्त हुए हैं।[20]

सेनुवार से अर्ध बहुमूल्य पत्थरों के मनके जैसे अगेट, कार्नेलियन और जैस्पर के बने तैयार और निर्माणाधीन मनके भी मिले हैं। भी प्राप्त हुई हैं। इस द्वितीय काल में केवल लाल मृदभांड पर रज्जू छाप अंकित किया गया है प्रमुख पात्र प्रकारों में कटोरे, घड़े एवं हाडियां मिली है।[20]

इस प्रकार का मृदभांड मध्य गंगा घाटी में केवल सेनूवार के द्वितीय कल से प्राप्त हुए अधिकांश पत्रों में केवल बाहरी भाग पर ही चित्रण किया गया है अन्य ठिकारों के साथ ही आकर विहीन ठिकारों भी प्राप्त हुए हैं। कुछ पात्रों पर अंगूठे एवं उंगली के निशान दिखाई पड़ते हैं।[23] ठिकारों के द्वारा पात्र– प्रकारों को समझा नहीं जा सकता है हालांकि कुछ ठिकरे छोटे घड़े एवं कटोरे के रूप में पहचाने गए हैं।[20]

सेनूवार से कृष्णा लोहिन मृदभांड की प्राप्ति भी द्वितीय काल से हुई है यहां से चित्रित एवं अचित्रित दोनों प्रकार के कृष्ण लोहित मृदभांड प्राप्त हुए हैं। प्रमुख पात्र प्रकारों में कटोरे, नालीयुक्त कटोरे, थालियां ,घड़े इत्यादि है।[20] मिट्टी के बने छिद्रदार तस्कारियों का उपयोग तकली या चरखे में किया जाता था। पक्की मिटटी की सामग्रियों में मां के मृदभांड, चकरी वृषभ, मृण्मूर्ति तथा सीटी प्राप्त हुई है चकरी जो बच्चों के खिलौने के पहिए हो सकते हैं ।[23] इन पात्रों को उच्च तापक्रम पर पकाने के फलस्वरुप पत्रों से धात्विक खनन मिलती है अधिकांश पत्रों के बाहरी एवं आंतरिक भाग को भी मार्जित किया गया है। इस वर्ग में भी एकमात्र केवल कटोरे ही प्राप्त हुए हैं।[20]

इस काल के लोग ताम्र धातुओं से परिचित हो गए थे। यहां पर बने औजारों में अधिकांश ब्लैक बेसाल्ट पत्थरों से बने थे। ताम्र पाषाण संस्कृति के पश्चात उत्तरकालीन कृष्णा मार्जित एवं लोहे का प्रयोग भी प्रारंभ हो गया यहां से उत्तरी काली कृष्ण मार्जित मृदभांड के अनेक रंग के मिले हैं किंतु चंपा जैसा नहीं है।[21] सेनूवार के मृदभांडों में खासकर उनकी ऊपरी सतह की बनावट में सुधार दिखाई देता है। यहां मिले ज्यादातर बर्तन चाक निर्मित हीं है परंतु हस्त निर्मित निर्मित मृदभांडों के कुछ टुकड़े भी मिले हैं। बर्तनों पर महीन लेप और उच्च गुणवत्ता की चमक मौजूद है। बर्तन पकाने के बाद किया गया लाल गेरू रंग जो पहले सिर्फ चमकीले धूसर मृदभांडों पर मिलता था वह विधि अब चमकीले लाल मृदभांडों में भी दिखाई देने लगी थी।[23]

सेनूवार के लोगों का जीवन का मुख्य आधार खेती था। खेती पर ही इनका जीवन निर्भर करता था इस संस्कृति काल से धान उपजाने के साक्ष्य मिले हैं जिससे स्पष्ट होता है कि सेनूवार के लोगों का मुख्य भोजन चावल था। चावल के अतिरिक्त यहाँ के लोग अन्य फसलों की खेती भी किया करते थे। यहाँ के लोग मुख्यतः धान, मटर, चना, गेहूं, ज्वार बाजरा,जौ इत्यादि से परिचित थे और इनकी खेती भी करते थे।[23]

इस सभ्यता के लोगों के द्वारा पशुपालन के भी साक्ष्य प्राप्त हुई हैं, पशुओं में बैल, भैंस, बकरा, सूअर इत्यादि पशुओं को पालने का भी प्रमाण मिला है। आखेटक के रूप में जंगली जानवरों का शिकार करना इन्हें बहुत पसंद था। खुदाई में मिले हड्डियों के अवशेष से शिकार तथा पशुपालन के प्रमाण मिलते हैं।[23]

सेनूवार से शुंग और कुषाण कालीन पूरावशेषों भी प्राप्त हुए हैं किंतु इसके पश्चात यह स्थल वीरान हो गया।[22]

संदर्भ सूची:

1. सिन्हा, वि०पी०, डायरेक्टरी ऑफ बिहार आर्कियोलॉजी ,बिहार पुराविद् परिषद, पटना, पृष्ठ 185–186
2. कुमार नवीन, आर्कियोलॉजिकल एक्सकेवेसन्स इन बिहार जानकी प्रकाशन, पटना ,पृष्ठ 86–87
3. सिन्हा, वि०पी०, वही, पृष्ठ 185
4. सिंह, वीरेंद्र प्रताप, अर्ली फार्मिंग कम्युनिटीज ऑफ द कैमूर अंक–01पृष्ठ 45
5. सिंह, वीरेंद्र प्रताप, अर्ली फार्मिंग, वही,पृष्ठ 46
6. वही, पृष्ठ 47
7. वही, पृष्ठ 104
8. सिन्हा, वि०पी०, वही, पृष्ठ 185
9. सिंह, वीरेंद्र प्रताप,वही, पृष्ठ 59
10. वही, पृष्ठ 49–50
11. वही, पृष्ठ 49
12. सिन्हा, वि०पी०, वही, पृष्ठ 185
13. सिन्हा, वि०पी०, वही, पृष्ठ 186
14. वही
15. वही
16. वही, पृष्ठ 186
17. वही
18. वही
19. वही
20. सिंह, वीरेंद्र प्रताप, वही, पृष्ठ 100–105
21. सिन्हा, वि०पी०, वही, पृष्ठ 186–187
22. वही, पृष्ठ 186–187
23. Upinder Singh, History of Ancient India (Hindi) Page-124-125